

Padma Vibhushan



DR. SHARDA SINHA (POSTHUOMOUS)

Dr. Sharda Sinha was a revered luminary in the realm of folk music. Her melodies and narratives, reflecting the myriad dimensions of social existence, have rendered her synonymous with “Lok Geet. The purity and resonance of her songs, particularly those that grace the venerable festival of “Chhath,” have intertwined her essence with this sacred celebration—an occasion revered by Indians worldwide.

2. Born on 1st November, 1952, in Hulas village in the Supaul district of Bihar, Dr. Sharda Sinha embarked on her musical odyssey under the tutelage of the revered Pandit Raghu Jha, an illustrious khayal singer hailing from the esteemed Panchgachiya Gharana. Her artistic journey further flourished under the guidance of the late Pandit Sitaram Hari Dandekar, a virtuoso of khayal, and later embraced the teachings of Panna Devi, a contemporary of the legendary Begum Akhtar, renowned for her mastery of thumri and dadra. Dr. Sharda Sinha, a Nritya Visharad in Manipuri dance, holder of a Master's in Music (Indian Classical Vocal), and a Ph.D., began to weave magic with her folk-classical experiment and an inimitable voice, even when she was relatively unknown in the vast tapestry of the music world. With her debut Maithili composition, “Dularua Bhaiya,” released in 1971, she ignited a tempest that signalled the dawn of a new epoch in folk music. Her tribute to the illustrious “Maithil Kokil Vidyapati” in 1983 catapulted her fame across distant shores, reaching audiences in Russia, China, the United Kingdom, and the United States. Between the years 1985 and 1989, a remarkable collection of albums—“Kekra Se Kahan Mile Jala,” “Piritiya,” “Dulhin,” “Mehndi,” “Shiv Ke Bhajan,” “Bhajan Sagar,” “Khaili Bada Dhokha,” and “Chhathi Maiya”—captured the hearts of listeners and soared to unprecedented sales within the realm of folk music in Northern India. Certain melodies, such as “Paniya Ke Jahaaj,” “Koyal Bin Bagiya,” and “Patna Se Baida,” resonated so profoundly with their audience that they have been joyfully hummed across four generations. Even today, these timeless tunes continue to evoke a sense of nostalgia and vibrancy in the minds of the people of Bihar and Uttar Pradesh.

3. In recognition of her mellifluous voice, Dr. Sharda Sinha is affectionately dubbed “Bihar Kokila,” “Swar Kokila,” and “Begum Akhtar of Mithila.” Her fans honor her for the purity and lyrical integrity of her music with titles such as “Bhojpuri Ki Sita,” “Saanskritik Paharua,” and “Bihar Ki Lata Mangeshkar.” A defining characteristic of her recitals is their rich portrayal of the mythological, ceremonial, and social intricacies woven into the fabric of Indian culture. Her contributions to the Bollywood cinematic landscape, with memorable numbers in blockbuster films such as “Maine Pyar Kiya,” “Hum Aapke Hain Koun,” “Gangs of Wasseypur-2,” and “Kaagaz,” along with her presence in the web series “Maharani-2,” have endeared her to countless admirers both in India and beyond. In her esteemed role as a cultural ambassador for the Government of India, she graced the stages of Mauritius, Suriname in 1988, followed by performances in Germany, Belgium, Holland, Luxembourg, Egypt in 2002, and Suriname again in 2003, showcasing the enchanting complexity of Indian folk music. With an unmistakable flair, this “Top Grade” artist of Akashwani has captivated numerous audiences at All India Radio concerts and cultural festivals throughout the nation. Over forty years, she has graced the halls of the Department of Music at Women's College in Samastipur of L.N.M.U. Darbhanga. In the month of April 2018, the university honored her with the honorary title of Doctor of Literature, a tribute to her profound contributions to the realm of folk music. Her artistry has been adorned with numerous prestigious accolades, including the revered titles of “Folk Queen of Bharat,” “Rashtriya Devi Ahiliya Samman,” “Bihar Kala Puraskar,” “Bihar Gaurav,” “Bihar Ratna,” “Bhikhari Thakur Samman,” “Bhojpuri Ratna,” and “Mithila Vibhuti Samman,” among countless others. She proudly wears the honors of “Padma Shri” (1991), the “Sangeet Natak Academy Award” (2000), and the distinguished “Padma Bhushan” (2018), each a testament to her exceptional legacy in the world of music.

4. Dr. Sharda Sinha passed away on 5th November, 2024.

पद्म विभूषण



डॉ. शारदा सिन्हा (मरणोपरांत)

डॉ. शारदा सिन्हा लोक संगीत के क्षेत्र में एक महान विभूति थीं। सामाजिक अस्तित्व के असंख्य आयामों को प्रतिबिंबित करने वाली उनकी धुनों और कथाओं ने उन्हें "लोक गीत" का पर्याय बना दिया है। उनके गीतों, विशेष रूप से वे गीत जो "छठ" के पवित्र पर्व को सुशोभित करते हैं, की पवित्रता और गूंज ने उनके सार को इस पवित्र उत्सव – एक ऐसा अवसर जिसे दुनिया भर में भारतीय पूजते हैं – के साथ जोड़ दिया है।

2. 01 नवंबर, 1952 को बिहार के सुपौल जिले के हुलास गांव में जन्मी, डॉ. शारदा सिन्हा ने अपनी संगीत यात्रा की शुरुआत पंडित रघु झा के संरक्षण में की थी, जो प्रतिष्ठित पंचगछिया घराना के एक प्रख्यात ख्याल गायक हैं। उनकी कलात्मक यात्रा स्वर्गीय पंडित सीताराम हरि दांडेकर, जो खयाल गायकी में प्रवीण थे, के मार्गदर्शन में आगे बढ़ी और बाद में इन्होंने पन्ना देवी की शिक्षाओं को अपनाया, जो दुमरी और दादरा में निपुणता के लिए प्रसिद्ध बेगम अख्तर की समकालीन थीं। मणिपुरी नृत्य में नृत्य विशारद, संगीत (भारतीय शास्त्रीय गायन) में स्नातकोत्तर डिग्री और पीएचडी धारक डॉ. शारदा सिन्हा ने अपने लोक-शास्त्रीय प्रयोग और एक अनोखी आवाज़ के साथ तब ही जादू बिखेरना शुरू कर दिया था, जब वह संगीत की दुनिया के विशाल ताने-बाने में अपेक्षाकृत अज्ञात थीं। वर्ष 1971 में रिलीज़ हुई अपनी पहली मैथिली रचना, "दुलरुआ भैया" से उन्होंने एक ऐसी हलचल मचा दी जो लोक संगीत में एक नए युग की शुरुआत का संकेत थी। वर्ष 1983 में प्रसिद्ध "मैथिल कोकिल विद्यापति" ने उनकी प्रसिद्धि को दूर-दूर तक फैला दिया और उनकी गूंज रूस, चीन, यूनाइटेड किंगडम और संयुक्त राज्य अमेरिका में दर्शकों तक जा पहुँची। वर्ष 1985 और 1989 के बीच, एल्बमों के एक उल्लेखनीय संग्रह— "केकरा से कहाँ मिले जाला," "पिरितिया," "दुलहिन," "मेहंदी," "शिव के भजन," "भजन सागर," "खाइली बड़ा धोखा," और "छठी मैया"— ने श्रोताओं के दिलों पर कब्ज़ा कर लिया और उत्तर भारत में लोक संगीत के क्षेत्र में अभूतपूर्व बिक्री हुई। कुछ धुनें, जैसे "पनिया के जहाज़," "कोयल बिन बगिया," और "पटना से बैदा" जैसे गीतों ने श्रोताओं को इतना प्रभावित किया कि चार पीढ़ियों द्वारा उन्हें खुशी-खुशी गुनगुनाया जाता रहा। आज भी ये सदाबहार गाने बिहार और उत्तर प्रदेश के लोगों के मन में पुरानी यादें और जीवंतता की भावना जगाते हैं।

3. उनकी मधुर आवाज़ के सम्मान में, डॉ. शारदा सिन्हा को प्यार से "बिहार कोकिला", "स्वर कोकिला", और "मिथिला की बेगम अख्तर" कहा जाता है। उनके प्रशंसक उनके संगीत की शुद्धता और गीतात्मक अखंडता के लिए उन्हें "भोजपुरी की सीता," "सांस्कृतिक पहरुआ," और "बिहार की लता मंगेशकर" जैसे उपनामों से सम्मानित करते हैं। उनके गायन की एक खासियत यह है कि वे भारतीय संस्कृति के ताने-बाने में बुनी गई पौराणिक, औपचारिक और सामाजिक पेचीदगियों का समृद्ध चित्रण करते हैं। बॉलीवुड सिनेमा के परिदृश्य में उनके योगदान, जिसमें "मैंने प्यार किया," "हम आपके हैं कौन," "गैंग्स ऑफ वासेपुर-2" और "कागज" जैसी ब्लॉकबस्टर फिल्मों में यादगार गानों के साथ-साथ महारानी-2 वेब सीरीज में उनकी मौजूदगी ने उन्हें भारत और उसके बाहर अनगिनत प्रशंसकों का प्रिय बना दिया है। भारत सरकार के सांस्कृतिक राजदूत के रूप में अपनी प्रतिष्ठित भूमिका में, उन्होंने भारतीय लोक संगीत की आकर्षक जटिलता का प्रदर्शन करते हुए 1988 में मॉरीशस, सूरीनाम के मंचों की शोभा बढ़ाई, इसके बाद वर्ष 2002 में जर्मनी, बेल्जियम, हॉलैंड, लक्जमबर्ग, मिस्र और वर्ष 2003 में फिर से सूरीनाम में प्रदर्शन किया। अपनी अनूठी प्रतिभा के साथ, आकाशवाणी की इस "शीर्ष ग्रेड" कलाकार ने पूरे देश में ऑल इंडिया रेडियो के संगीत समारोहों और सांस्कृतिक उत्सवों में असंख्य श्रोताओं को मंत्रमुग्ध किया है। उन्होंने चालीस वर्ष से अधिक समय तक एलएनएमयू दरभंगा के समस्तीपुर में महिला कॉलेज के संगीत विभाग के हॉल की शोभा बढ़ाई है। वर्ष 2018 के अप्रैल महीने में, विश्वविद्यालय ने उन्हें डॉक्टर ऑफ लिटरेचर की मानद उपाधि से सम्मानित किया, जो लोक संगीत के क्षेत्र में उनके गहन योगदान के लिए एक श्रद्धांजलि है। उनकी कला को कई प्रतिष्ठित पुरस्कारों से सम्मानित किया गया है, जिसमें अन्य अनगिनत सम्मानों के साथ-साथ "भारत की लोक रानी", "राष्ट्रीय देवी अहिल्या सम्मान," "बिहार कला पुरस्कार," "बिहार गौरव," "बिहार रत्न," "भिखारी ठाकुर सम्मान," "भोजपुरी रत्न," और "मिथिला विभूति सम्मान" जैसे प्रतिष्ठित खिताब शामिल हैं। उनको "पद्मश्री" (1991), "संगीत नाटक अकादमी पुरस्कार" (2000), और प्रतिष्ठित "पद्म भूषण" (2018) का गौरवपूर्ण सम्मान प्राप्त है, जिनमें से प्रत्येक संगीत की दुनिया में उनकी असाधारण विरासत का प्रमाण है।

4. 5 नवंबर, 2024 को डॉ. शारदा सिन्हा का निधन हो गया।